



भाभी की ननद और मेरा लण्ड-5

“ अब माला के जिस्म पर तो एक धागा तक नहीं था और मेरे जिस्म पर पजामा था और मैं चाहता था किसी तरह से माला को गर्म कर दूँ क्योंकि औरत पूरी तरह से सहयोग सिर्फ तब ही करती है कि या तो वो सेक्स अभ्यस्त हो या फिर पूरी तरह से गर्म हो ! [...]

”

...

Story By: dalbir singh (dr.dalbir.singh)

Posted: Saturday, January 11th, 2014

Categories: [पड़ोसी](#)

Online version: [भाभी की ननद और मेरा लण्ड-5](#)

भाभी की ननद और मेरा लण्ड-5

अब माला के जिस्म पर तो एक धागा तक नहीं था और मेरे जिस्म पर पजामा था और मैं चाहता था किसी तरह से माला को गर्म कर दूँ क्योंकि औरत पूरी तरह से सहयोग सिर्फ तब ही करती है कि या तो वो सेक्स अभ्यस्त हो या फिर पूरी तरह से गर्म हो !

आज मैं अपने पूरे के पूरे ज्ञान को आजमाना चाहता था इसलिए मैंने अपने आप को आज चूत चाटने के लिए तैयार किया था पर अभी मानसिक रूप से पूरी तरह से मैं तैयार नहीं था, मैं यह भी चाहता था कि आज माला की चुदाई कुछ इस तरीके से करूँ कि उसे मज़ा भी आ जाये और वो याद भी रखे ।

मैं उसकी चूत चाटना चाह रहा था पर साथ ही मन में कुछ घिन सी भी थी । फिर मैंने अपने आप को मानसिक रूप से तैयार किया और पलटी मर के अपना मुँह रजाई के अंदर कर के अपना मुँह मैंने माला की चूत की तरफ कर लिया और अब मेरी टाँगें माला के सर की तरफ थीं । मैंने अपना मुँह उसकी चूत पर लगाया, थोड़ा सा उबकाई जैसा महसूस हुआ पर फिर भी मैंने अपना मन कड़ा करके अपनी जीभ उसकी चूत पर लगा दी, उसकी चूत काफी गीली थी और उसमें से जो पानी सा निकला था वो बिल्कुल उसी तरह का था जो मुठ मरने से पहले चिपचिपा सा मेरे लण्ड में से निकलता था, उसकी चूत में थोड़ी अलग तरह की गन्ध थी ।

मैंने अपनी हिम्मत जुटाई और अपनी जीभ उसकी चूत पर लगा दी थोड़ा चिपचिपा और नमकीन सा स्वाद चूत का और मेरे जीभ लगते ही उसके मुँह से आहूह की आवाज़ निकली और उसने मेरा पजामा और अंडरवियर एक साथ नीचे को खींच कर मेरी टांगों में से निकाल दिया ।

मैंने सोचा कि अब वो मेरे लण्ड को अपने मुँह में लेगी पर उसने मुँह में नहीं लिया, बस बहुत बुरी तरह से सिस्कार रही थी और मचल रही थी। मैं अपने दोनों हाथ उसके कूल्हों के नीचे ले आया और दोनों हाथों से उसके नर्म चूतड़ों को कस कस के दबा रहा था और कभी-कभी अपनी उंगली उसकी गांड के छेद पर फ़िरा कर सहला रहा था।

जैसे ही उंगली उसकी गांड के छेद पर पहुँचती, वो बड़े जोर से अपने चूतड़ ऊपर को उछाल देती और मुँह से 'आआआहूहह' की आवाज़ निकाल देती जिससे मेरा जोश और दुगना-चौगुना हो जाता और मैं भी अपनी जीभ पूरे जोर से उसकी चूत पर फेरता और जीभ को अंदर घुसेड़ने की कोशिश करता।

इधर मेरा लण्ड भी फट पड़ने कि तैयार हो रहा था, मैंने अपने चूतड़ ऊपर को उठा कर अपना लण्ड उसके मुँह में देने की कोशिश की पर उसने अपना मुँह दूसरी तरफ घुमा लिया। अब मेरी सहन शक्ति जवाब दे रही थी चाहे तो वो भी यही रही थी कि अंदर डाल दूँ पर शायद शर्म के मारे कह नहीं पा रही थी।

लगभग 15-20 मिनट तक उसकी चूत चूसने के बाद मैं सीधा हो गया, उसकी बगल में आकर लेट गया और दोबारा से उसके मम्मे अपने मुँह में लेकर चूसने शुरू कर दिए। अब मेरी हर हरकत उसको और अधिक उत्तेजित कर रही थी और उसके मुँह से निकलने वाली 'उह... आह... उई...' की आवाज़ें बढ़ती जा रही थीं।

जैसे जैसे उसकी कामुकता और तेज़ हो रही थी वैसे वैसे अब वो शर्म छोड़ कर मुझ से कस कर लिपट रही थी। अब उसने मेरी बांह पकड़ कर अपने ऊपर की ओर खींचना शुरू कर दिया तो मैं समझ गया कि अब उससे सहन नहीं हो रहा।

जैसे ही मैं उसके ऊपर आया और मैंने हाथ से पकड़ कर अपना लण्ड उसके छेद पर फिट किया, लण्ड के स्पर्श मात्र से ही वो एकदम से गनगना गई, उसने अपनी गांड ऊपर को उठा

दी और बिना किसी खास प्रयास के ही मेरा आधे से अधिक लण्ड उसकी चूत में घुस गया ।

उसके मुंह से दर्द और मस्ती की सम्मिश्रित आवाज़ निकल गई 'उउईई... ईहूह...' और उसके चेहरे पर भी दर्द के भाव साफ़ दिख रहे थे इतनी देर के बाद भाभी की आवाज़ आई- बिट्टू, आराम से मैं तो अब तक भूल ही गया था कि कमरे में हम दोनों के अलावा भी कोई है और मुझे याद आया कि कल ही तो इसकी चूत का उद्घाटन हुआ है ।

मैंने कहा- हाँ भाभी, ठीक है ।

और इसके बाद मैं अपना लण्ड धीरे धीरे अंदर धकेलने लगा ।

मुझे पूरा लण्ड अंदर डालने में लगभग आधा या पौना मिनट लगा होगा । जैसे जैसे मेरा लण्ड अंदर जा रहा था, उसे दर्द का एहसास हो रहा था पर अब मैं इस स्थिति था कि न तो मैं रुक सकता था ना ही उसके दर्द के बारे में चिंता कर सकता था और इस बात की गारंटी थी कि मुझे चुदाई में समय तो पूरा लगेगा ही क्योंकि मैं आने से पहले एक बार मुठ मर के आया था ।

कुछ ही देर में मेरा लण्ड पूरा उसकी चूत में उतर गया । कुछ देर के लिए मैं उसके ऊपर ही लेट गया और उसके भरे भरे चुच्चों को मुंह में भर लिया और बड़े प्यार से चूसने लगा । अब माला भी कुछ शांत सी हो गई थी, उसके चेहरे से दर्द के भाव गायब हो गए और उसकी आँखें मुंदने लगीं, मुँह से सिसकारियाँ निकलनी शुरू हो गई ।

यह महसूस करते ही मैंने भी धीरे धीरे हिलना शुरू कर दिया, मेरी इस क्रिया से उसको भी मज़ा आने लगा और वो भी नीचे से थोड़ा थोड़ा कसमसाने लगी, मैं भी समझ गया कि अब इसे मज़ा आ रहा है । यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

धीरे धीरे मैंने भी अपनी गति बढ़ानी शुरू कर दी, मेरे हर धक्के के साथ उस के मुख से

‘उह... आह...’ की आवाज़ें आ रही थीं और इससे मेरी उत्तेजना और ज्यादा बढ़ रही थी, मैं कभी तो उसके होंठ चूस रहा था कभी उसकी चूची को मुँह में भर लेता था, कभी कभी उसके चूचों पर हल्के हल्के दाँत से काट भी लेता था, इससे उसे दर्द नहीं हो रहा था बल्कि मज़ा आ रहा था।

लगभग 8-10 मिनट की ठुकाई के बाद अब उसकी तरफ से पूरा सहयोग शुरू हो गया था और आज वो कल से ज्यादा मजा लेकर चुदवा थी और साथ ही मुँह से अजीब अजीब आवाज़ें निकल रही थी- आआआ... आहूह... आअ... अईई...

मैं बीच में धीरे हो जाता था तो वो जोर लगाती और उसके मुँह से ‘आह... आहूह...’ आवाज़ें मुझे और ज्यादा उत्तेजित कर देतीं, मेरी गति फिर से बढ़ जाती, मैं फिर से जोर जोर के धक्के मारने लग जाता था।

अब मैंने उसके होंठों को अपने मुँह में भर लिया और अपनी पूरी जीभ उसके मुँह में डाल दी, बांये हाथ से उसकी चूची का निप्पल मसल रहा था और दांया हाथ नीचे ले जाकर उसकी गांड के छेद पर फेरना शुरू कर दिया। इससे उसकी उत्तेजना और आवाज़ें बहुत बढ़ गई थीं और उसके मुँह से हाये हाये और ‘आह... आआ... आआ... अई’ की आवाज़ आ रही थी और आवाज़ों का रिदम उसके हिलते हुए चूतड़ों के साथ बन रहा था। जैसे ही वो गांड उठाती, साथ ही उसके मुँह से आवाज़ आती- हाय !

अब उसकी आवाज़ें इतनी तेज़ हो गई थीं कि मैं समझ गया कि अब इसका काम तो होने वाला है और मैंने जोर का धक्का लगाया और पूरा लण्ड अंदर तक धकेल कर वहीं पर रुक गया तो वो 2-3 सेकंड तक तो समझ ही नहीं पाई और फिर एकाएक बोली- करओओ ना... रुक क्यों गए ?

और नीचे से जोर का धक्का मारा ऊपर की तरफ को, तो मैंने दोबारा से धक्के मारने शुरू

कर दिए। अब अपना पूरा जोर लगा कर मैं उसको चोद रहा था, मैंने सोचा कि अब तो मेरा भी हो जाये तो ही ठीक है, मैंने 8-10 धक्के और मारे होंगे कि माला ने मुझे बहुत कस कर अपनी बाँहों में भींच लिया और उसकी चूत में से काफी सारा पानी निकल गया और वो अपने चूतड़ एकदम ऊपर को उठा कर रुक गई जिस वजह से मेरे धक्के फिर से रुक गए थे पर मैंने दोबारा से जब जोर लगाया तो वो नीचे को हो गई और मैं भी उसे पूरे जोर से चोदने लगा।

माला की चूत से निकले पानी के कारण चूत पूरी तरह गीली और चिकनी हो गई थी जिस कारण लण्ड आराम से अंदर बाहर जा रहा था अब मेरे मुँह से भी खूब ज़ोर की 'आह... आह...' की आवाज़ें निकल रही थीं, लण्ड तो एकदम लकड़ी की तरह सख्त हो गया था। अब मुझे लग रहा था कि अब मेरा काम भी होने वाला है, मेरी स्पीड और तेज़ हो गई और मुझे दुनिया की और कोई भी चीज़ नहीं सूझ रही थी, बस मैं था और माला की चूत और मेरे जोर जोर से धक्के।

करीब 20-25 धक्के और मारने के बाद मेरा लण्ड भी जवाब दे गया, मेरे टोपे पर बड़े ज़ोर की गुदगुदी सी हुई, मेरे लण्ड ने भी पूरे जोर के साथ अपना माल बाहर निकाल दिया और पूरे जोर की पिचकारी मारी और फिर एक के बाद एक कई सारी पिचकारियों में अपनी पूरी गर्मी उसकी चूत में ही निकाल दी और मेरा शरीर भी निढाल सा हो गया।

मेरी सांस ऐसे चल रही थी जैसे मैं कई मील की दौड़ लगा कर आ रहा होऊँ, मेरे माल की गर्मी से माला भी एक बार और झड़ गई और उसने मुझे बहुत जोर से अपनी बाँहों में कस लिया, हम दोनों दीन दुनिया से बेखबर एकदम बेहोशी की सी हालत में सो गए।

करीब एक घंटे बाद मेरी नींद खुली तो देखा कि भाभी भी सो गई थी और माला भी अभी सो रही थी। सोती हुई माला एकदम से मासूम सी लग रही थी। नींद में ही मेरा लण्ड सिकुड़ कर उसकी चूत में से बाहर आ चुका था। मैं माला के ऊपर से उतरा और सिरहाने

रखा हुआ कपड़ा ले कर पहले अपना लण्ड साफ़ करा फिर माला की चूत भी पोंछी पर वो सोती ही रही फिर बिना कोई कपड़ा पहने ही माला के साथ चिपक कर सो गया ।

पर नींद किसे आ रही थी, थोड़ी देर बाद मेरा लण्ड फिर से खड़ा हो गया और मैंने फिर से उसकी चूचियों में अपना मुंह लगा दिया । कुछ देर की चूची चुसाई के बाद उसकी भी नींद खुल गई । तब मैंने उठ कर पहले उसे गर्म दूध पिलाया और खुद भी पिया और एक बार और चुदाई की ।

सुबह जब मंदिर का घंटा बजा तो फिर से मेरी नींद खुल गई और हमने एक बार और चुदाई करी पर लगातार चुदाई करने के कारण मुझे कमजोरी सी महसूस होने लगी थी, सुबह उठ कर भाभी ने ही पहले चाय बना कर पिलाई और फिर गर्म दूध के साथ बादाम और परांटों का नाश्ता करवाया ।

उसके बाद अगले तीन दिन तक रोजाना माला की चूत कभी दो बार और कभी तीन बार लेता रहा ।

इसके बाद फिर कभी भी माला के साथ कोई मौका नहीं मिला हालाँकि भाभी की चूत उसके बाद भी कई बार मिली ।

तो दोस्तो, यह थी मेरी और माला की चुदाई कथा ! इसके बाद और भी कई सारी घटनाएँ जीवन में हुईं । पर सबसे बुरा यह हुआ कि मेरी पत्नी की सेक्स में कभी भी कोई ज़्यादा रूचि नहीं रही । पिछले 7-8 सालों से उसकी रूचि बिल्कुल खत्म सी हो गई है और गुज़रे एक साल में तो हमने एक बार भी कुछ नहीं किया और आजकल तो मुठ मार कर गुजारा करना पड़ता है ।

माला के बाद की कहानियाँ भी धीरे धीरे कर के भेजूंगा । अपनी अमूल्य राय से अवगत कराना न भूलें ।

dr.dalbir66@yahoo.com

3915

Other stories you may be interested in

पांच सहेलियाँ अन्तरंग हो गयी

दोस्तो, आज बहुत दिनों बाद आपसे कुछ यादें शेयर करना चाहता हूँ. मेरी पिछली कहानी थी शादीशुदा लड़की का कुंवारी सहेली से प्यार आज की मेरी कहानी देहरादून में बन रहे पाँवर प्रोजेक्ट के इंजीनियरों की है. ये पांच इंजीनियर [...]

[Full Story >>>](#)

यार से मिलन की चाह में तीन लंड खा लिए-5

पिछले भाग में आपने पढ़ा कि लॉज का मैनेजर मेरी चूत को पेल रहा था और जीजा सामने कुर्सी पर बैठे हुए अपना लंड हिला रहे थे. लॉज के नौकर ने मेरे मुँह में लंड दे रखा था. जीजा को [...]

[Full Story >>>](#)

जिगोलो बन कर भाभी की जवानी की प्यास बुझाई

नमस्कार दोस्तो! मेरा नाम मनोज है। मैं अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ और रोज़ अन्तर्वासना की कहानियाँ पढ़ कर अपना पानी निकालता था। और जब भी पानी निकल जाता था तो सोचता था कि ऐसा कैसे हो सकता है कि [...]

[Full Story >>>](#)

भाभी की कुंवारी बहन की सीलतोड़ चुदाई

अन्तर्वासना के सभी दोस्तों को मेरा प्रणाम, मेरा नाम पंकज सिंह है. मैं पिछले 3 साल से दिल्ली में पढ़ाई कर रहा हूँ. मेरी उम्र अभी 24 साल है. मेरा कद 5 फुट 9 इंच है. मैं गोरे रंग का [...]

[Full Story >>>](#)

चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-2

मेरी सेक्स कहानी के प्रथम भाग चुदने को बेताब मेरी प्यासी जवानी-1 में आपने पढ़ा कि कॉलेज में जाते ही मेरा दिल धड़कने लगा था किसी जवान मर्द के लिए, मेरी प्यासी जवानी मेरे सर चढ़ कर बोल रही थी. [...]

[Full Story >>>](#)

